क्यों मंगल-सूचक माना जाता है सिंदूर

भारतीय वैदिक परंपरा खासतौर पर हिंदू समाज में शादी के बाद महिलाओं को मांग में सिंदूर भरना आवश्यक हो जाता है। आधुनिक दौर में अब सिंदूर की जगह कुंकु और अन्य चीजों ने ले ली है। सवाल यह उठता है कि आखिर सिंदूर ही क्यों लगाया जाता है। दरअसल इसके पीछे एक बड़ा वैज्ञानिक कारण है। यह मामला पूरी तरह स्वास्थ्य से जुड़ा है। सिर के उस स्थान पर जहां मांग भरी जाने की परंपरा है, मस्तिष्क की एक महत्वपूर्ण ग्रंथी होती है, जिसे ब्रह्मरंध्र कहते हैं। यह अत्यंत संवेदनशील भी होती है। यह मांग के स्थान यानी कपाल के अंत से लेकर सिर के मध्य तक होती है।

सिंदूर इसलिए लगाया जाता है क्योंकि इसमें पारा नाम की धातु होती है। पारा ब्रह्मरंध्र के लिए औषधि का काम करता है। महिलाओं को तनाव से दूर रखता है और मस्तिष्क हमेशा चैतन्य अवस्था में रखता है। विवाह के बाद ही मांग इसलिए भरी जाती है क्योंकि विवाह के बाद जब गृहस्थी का दबाव महिला पर आता है तो उसे तनाव, चिंता और अनिद्रा जैसी बीमारियां आमतौर पर घेर लेती हैं। पारा एकमात्र ऐसी धातु है जो तरल रूप में रहती है। यह मस्तिष्क के लिए लाभकारी है, इस कारण सिंदूर मांग में भरा जाता है। मांग में सिन्दूर भरना औरतों के लिए सुहागिन होने की निशानी माना जाता है। विवाह के समय वर द्वारा वधू की मांग में सिंदूर भरने के संस्कार को सुमंगली क्रिया कहते हैं। हिंदू धर्म के अनुसार मांग में सिंदूर भरना सुहागिन होने का प्रतीक है। सिंदूर नारी श्रृंगार का भी एक महत्वपूर्ण अंग है। सिंदूर मंगल-सूचक भी होता है। शरीर विज्ञान में भी सिंदूर का महत्व बताया गया है। सिंदूर में पारा जैसी धातु अधिक होने के कारण चेहरे पर जल्दी झुर्रियां नहीं पड़ती।

साथ ही इससे स्त्री के शरीर में स्थित विद्युतीय उत्तेजना नियंत्रित होती है। मांग में जहां सिंदूर भरा जाता है, वह स्थान ब्रह्मरंध्र और अध्मि नामक मर्म के ठीक ऊपर होता है। सिंदूर मर्म स्थान को बाहरी बुरे प्रभावों से भी बचाता है। सामुद्रिक शास्त्र में अभागिनी स्त्री के दोष निवारण के लिए मांग में सिंदूर भरने की सलाह दी गई है।

मृत्यु के समय मुख में गंगा जल क्यों डाला जाता है?

श्री गंगा जी को भारतीय ही नहीं विदेशी विद्वान भी परम पवित्र नदी स्वीकार करते हैं। गंगा में स्नान करना भी पुण्यों को अर्जित करना है क्योंकि गंगा जल हिमालय की दुर्लभ औषधीय वनस्पतियों के गुणों से संपन्न है और इसे कई सालों तक बगैर संक्रमित हुए सुरक्षित रख सकते हैं। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में ऐसे और भी अनेक कारण हैं, जो गंगा नदी को माता के समान पूजनीय बनाते हैं। इसका जल अनेक रोगों से छुटकारा दिलाने के साथ-साथ बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है।

श्री गंगा जी का जल साक्षात ब्रह्मा है इसलिए उन्हें द्रव की संज्ञा दी जाती है। ब्रह्मा की तो प्रकृति ही है मुक्त कर देना इसलिए मृत्यु के समय मुख में गंगा जल डालना आवश्यक माना गया है। यहां तक की मृतक की अस्थि का एक छोटा टुकड़ा किसी काक या मांस भक्षी पक्षी की चोंच से छूकर गंगा में गिर जाए तो भी उस मृतक की मुक्ति निश्चित है। इसी आधार पर गंगा जल को द्रवतीर्थ कहा जाता है। मान्यता है की गंगा जी स्वर्गलोक से ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को पृथ्वी पर उतरी थी।

गंगा में स्नान का बहुत महत्व है भले ही होटल या घर से नहाकर ही गंगा दर्शन करने गए हों, फिर भी वह नहाए बिना दर्शन नहीं हो सकते। वास्तव में जल का ही महत्व है। जल को इस सृष्टि का सबसे शुद्ध तत्व माना गया है। बिना जल शरीर पर डाले शुद्धिकरण नहीं हो सकता। वेदों ने जल को ही परमब्रह्म माना है।

क्यों किया जाता है दीपक को नमस्कार

समस्त हिंदु घरों में भगवान के सामने सुबह या शाम को या फिर दोनों समय दीपक प्रज्वलित किया जाता है। कुछ स्थानों पर अविरल या अखंड ज्योत भी की जाती है। किसी भी पूजा के शुरू होने से लेकर पूर्ण होने तक दीपक को प्रज्वलित कर के रखने का विधान है। प्रकाश ज्ञान का द्योतक है और अंधेरा अज्ञान का।

प्रभु ज्ञान के सागर है इसलिए दीपक प्रज्वलित कर प्रभु की अराधना की जाती है। ज्ञान वो आंतरिक उजाला है जिससे बाहरी अंधेरे पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अत दीपक प्रज्वलित कर हम ज्ञान के उस सागर के सामने नतमस्तक होते है। प्रकाश तो बिजली से भी हो सकता है फिर दीपक की क्या आवश्यकता?

दीपक का महत्व है कि दीपक के अन्दर जो घी या तेल होता है वो हमारी वासनाएं, हमारे अंहकार का प्रतीक है और दीपक की लौ के द्वारा हम अपने वासनाओं और अंहकार को जला कर ज्ञान का प्रकाश फैलाते है दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि दीपक की लौ हमेशा ऊपर की तरफ उठती है जो ये दर्शाती है कि हमें अपने जीवन को ज्ञान के द्वारा उच्च आदर्शो की ओर बढ़ाना चाहिए।

दीप देव को नमस्कार करें –

शुभम करोति कल्याणम आरोग्यम धन सम्पदा,
शत्रुबुध्दि विनाशाय दीपज्योति नमस्तुते ।।

अर्थात सुन्दर और कल्याणकारी, आरोग्य और संपदा को देने वाले हे दीप, शत्रु की बुद्धि के विनाश के लिए हम तुम्हें नमस्कार करते हैं।

कुछ मान्यताएं

एकल बाती – सामान्य लाभ के लिए।
दो बाती वाला – परिवार और रिश्तेदारों में सद्भाव और शांति लाता है।
तीन बाती वाला – संतान के साथ आशीर्वाद देता है।
चार बाती वाला – सर्वांगीण समृद्धि और वैभवशाली भोजन लाता है।
पांच बाती वाला – अखंड ऐश्वर्य या धन की बारिश लाता है।
छह बाती वाला – अखंड ज्ञान और वैराग्य व त्याग के साथ आशीर्वाद देता है।

ब्रज रस में श्री राधाजी की विशेष महिमा का आधार

राधा श्री राधा रटूं, निसि-निसि आठों याम।
जा उर श्री राधा बसै, सोइ हमारो धाम

जब-जब इस धराधाम पर प्रभु अवतरित हुए है उनके साथ साथ उनकी आह्लादिनी शक्ति भी उनके साथ ही रही है। स्वयं श्री भगवान ने श्री राधा जी से कहा है – हे राधे! जिस प्रकार तुम ब्रज में श्री राधिका रूप से रहती हो, उसी प्रकार क्षीरसागर में श्री महालक्ष्मी, ब्रह्मलोक में सरस्वती और कैलाश पर्वत पर श्री पार्वती के रूप में विराजमान हो।

भगवान के दिव्य लीला विग्रहों का प्राकट्य ही वास्तव में अपनी आराध्या श्री राधा जी के निमित्त ही हुआ है। श्री राधा जी प्रेममयी है और भगवान श्री कृष्ण आनन्दमय है। जहां आनन्द है वहीं प्रेम है और जहां प्रेम है वहीं आनन्द है। आनन्द-रस-सार का घनीभूत विग्रह स्वयं श्री कृष्ण है और प्रेम-रस-सार की घनीभूत श्री राधारानी है अतः श्री राधा रानी और श्री कृष्ण एक ही है। श्रीमद्भागवत् में श्री राधा का नाम प्रकट रूप में नहीं आया है, यह सत्य है। किन्तु वह उसमें उसी प्रकार विद्यमान है जैसे शरीर में आत्मा। प्रेम-रस-सार चिन्तामणि श्री राधा जी का अस्तित्व आनन्द-रस-सार श्री कृष्ण की दिव्य प्रेम लीला को प्रकट करता है। श्री राधा रानी महाभावरूपा है और वह नित्य निरंतर आनन्द-रस-सार, रस-राज, अनन्त सौन्दर्य, अनन्त ऐश्वर्य, माधुर्य, लावण्यनिधि, सच्चिदानन्द स्वरूप श्री कृष्ण को आनन्द प्रदान करती है। श्री कृष्ण और श्री राधा रानी सदा अभिन्न है।

श्री कृष्ण कहते है – जो तुम हो वही मैं हू हम दोनों में किंचित भी भेद नहीं है। जैसे दूध में श्वेतता, अग्नि में दाहशक्ति और पृथ्वी में गंध रहती है उसी प्रकार मैं सदा तुम्हारे स्वरूप में विराजमान रहता हू।

श्रीराधा सर्वेश्वरी, रसिकेश्वर घनश्याम।
करहुं निरंतर बास मैं, श्री वृन्दावन धाम॥

वृन्दावन लीला लौकिक लीला नहीं है। लौकिक लीला की दृष्टी से तो ग्यारह वर्ष की अवस्था में श्री कृष्ण ब्रज का परित्याग करके मथुरा चले गये थे। इतनी लघु अवस्था में गोपियों के साथ प्रणय की कल्पना भी नहीं हो सकती परन्तु अलौकिक जगत में दोनों सर्वदा एक ही हैं फिर भी श्री कृष्ण ने श्री ब्रह्मा जी को श्री राधा जी के दिव्य चिन्मय प्रेम-रस-सार विग्रह का दर्शन कराने का वरदान दिया था, उसकी पूर्ति के लिये एकान्त अरण्य में ब्रह्मा जी को श्री राधा जी के दर्शन कराये और वहीं ब्रह्मा जी के द्वारा रस-राज-शेखर श्री कृष्ण और महाभाव स्वरूपा श्री राधा जी की विवाह लीला भी सम्पन्न हुई।

गोरे मुख पै तिल बन्यौ, ताहि करूं प्रणाम।
मानों चन्द्र बिछाय कै पौढ़े शालिग्राम॥

रस राज श्री कृष्ण आनन्दरूपी चन्द्रमा है और श्री प्रिया जू उनका प्रकाश है। श्री कृष्ण जी लक्ष्मी को मोहित करते है परन्तु श्री राधा जी अपनी सौन्दर्य सुषमा से उन श्री कृष्ण को भी मोहित करती है। परम प्रिय श्री राधा नाम की महिमा का स्वयं श्री कृष्ण ने इस प्रकार गान किया है- जिस समय मैं किसी के मुख से रा अक्षर सुन लेता हू, उसी समय उसे अपना उत्तम भक्ति-प्रेम प्रदान कर देता हू और धा शब्द का उच्चारण करने पर तो मैं प्रियतमा श्री राधा का नाम सुनने के लोभ से उसके पीछे-पीछे चल देता हू, ब्रज के रसिक संत श्री किशोरी अली जी ने इस भाव को प्रकट किया है।

आधौं नाम तारिहै राधा।
र के कहत रोग सब मिटिहैं, ध के कहत मिटै सब बाधा॥
राधा राधा नाम की महिमा, गावत वेद पुराण अगाधा।
अलि किशोरी रटौ निरंतर, वेगहि लग जाय भाव समाधा॥

ब्रज रस के प्राण श्री ब्रजराज कुमार की आत्मा श्री राधिका है। एक रूप में जहां श्री राधा श्री कृष्ण की आराधिका, उपासिका है वहीं दूसरे रूप में उनकी आराध्या एवं उपास्या भी है।

आराध्यते असौ इति राधा।

शक्ति और शक्तिमान में वस्तुतः कोई भेद न होने पर भी भगवान के विशेष रूपों में शक्ति की प्रधानता है। शक्तिमान की सत्ता ही शक्ति के आधार पर है। शक्ति नहीं तो शक्तिमान कैसे? इसी प्रकार श्री राधा जी श्री कृष्ण की शक्ति स्वरूपा है। रस की सत्ता ही आस्वाद के लिए है। अपने आपको अपना आस्वादन कराने के लिए ही स्वयं रसरूप श्यामसुन्दर श्री राधा बन जाते है। श्री कृष्ण प्रेम के पुजारी है इसीलिए वे अपनी पुजारिन श्री राधा जी की पूजा करते हैं, उन्हें अपने हाथों से सजाते-संवारते है, उनके रूठने पर उन्हें मनाते है। श्रीकृष्ण जी की प्रत्येक लीला श्री राधे जी की कृपा से ही होती है, यहां तक कि रासलीला की अधिष्ठात्री श्री राधा जी ही है। इसीलिए ब्रज रस में श्री राधा जी की विशेष महिमा है।

ब्रज मण्डल के कण कण में है बसी तेरी ठकुराई।
कालिन्दी की लहर लहर ने तेरी महिमा गाई॥
पुलकित होयें तेरो जस गावें श्री गोवर्धन गिरिराई।
लै लै नाम तेरो मुरली पै नाचे कुंवर कन्हाई

इन दस नामों का जाप भगाए जीवन से संताप

ज्योतिष के अनुसार शनि को सबसे निर्दयी और क्रूर देवता माना गया है। इन्हें न्यायाधीश का पद प्राप्त है। इसी वजह से इस ग्रह का स्वभाव क्रूर है कि यह व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मों का वैसा ही फल प्रदान करता है। साथ ही यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में शनि अशुभ स्थिति में हो तो उसे कई प्रकार के बुरे प्रभाव झेलने पड़ते हैं और जीवन में छोटी-छोटी सफलताओं के लिए भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार शनि की टेढ़ी नजर यानि वक्र दृष्टि हर व्यक्ति के जीवन में हलचल मचाती है। जहां शुभ ग्रह के प्रभाव से शनि दशा शुभ फल भी दे सकती है लेकिन अशुभ ग्रहों के असर से शनि दशा के बुरे नतीजे भी दिखाई देते हैं इसलिए शास्त्रों में शनि दशा चाहे वह ढैय्या, महादशा या साढ़े साती हो। धर्म ग्रंथों के मतानुसार शनि देव को प्रसन्न करने के लिए इन दस नामों का जाप जीवन से संताप भगा देता है। प्रतिदिन इन नामों का नित्य जाप करने से शनिदेव अपने भक्तों पर अनुकम्पा करते हैं। ये प्रमुख 10 नाम इस प्रकार हैं-

1- कोणस्थ 2- पिंगल 3- बभ्रु 4- कृष्ण 5- रौद्रान्तक
6- यम 7- सौरि 8- शनैश्चर 9- मंद 10- पिप्पलाद